# जैवविविधता का संरक्षण एवं संबर्धन हेतु किये गये कार्य का दस्तावेजीकरण

## कार्यस्थल – ग्राम पंचायत पिपरई मुरैना म0प्र0

गूगल के संरक्षण हेतु विनाषहीन विदोहन की प्रकिया के तहत गोंद निकालने हेतु चीरा लगाना सीखते हुये किसान।

**सहयोग– सेंटर फोर इनबारोनमेंट एज्यूकेषन (सी0 ई0 ई0 ) दिल्ली**

**एवं**

**म0प्र0 राज्य जैवविविधता बोर्ड भोपाल म0प्र0**

**द्वारा** –सुजाग्रति समाज सेवी संस्था मुरैना म0प्र0 एवं जैवविविधता प्रबंधन समिति पिपरई मुरैना म0प्र0

**एल आई जी –914 न्यू हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी मुरैना म0प्र0**

**मो0 –** 09826318465

मेल – zakirhussain1965@yahoo.co.in

**बेव साइट –** www.sujagriti.org

# जैवविविधता का संरक्षण एवं संबर्धन –

किसी भी क्षेत्र के समुदाय के आजीविकोपार्जन की पद्धति को वहॉ की जैवविविधता प्रभावित करती है। मानव जीवन के अस्तित्व उसकी आर्थिक आत्मनिर्भता व प्राकृतिक सन्तुलन के लिये जैवविविधता आवष्यक है। जैविक सम्पदा की सम्पन्नता उसकी विविधता है, अर्थात जितने अधिक किस्म की वनस्पतियॉ पेड–पौधे अनाज जीव जन्तु जल स्त्रोत आदि हमारी प्रकृति में होगें उतनी ही स्वस्थ्य हमारी धरती और उस पर वसने वाले लोग होंगे।

यह जैवविविधता प्रदेष की निरन्तर विकास की धारा को बनाये रखते हुये प्रदेष के लाखों जनों की रोजी–रोटी को मजबूती प्रदान करते हुये कुदरत के संतुलन को बनाये रखने में सहायक है। प्रदेष में इतनी संपन्न जैवविविधता के होते हुये भी गरीबी और आभाव की जिन्दगी भी है मौसमी पलायन भी है, इन सबके चलते हमारी जैवविविधता का खतरा उत्पन्न हो गया है।

## सुजाग्रति समाज सेवी संस्था :–

सुजाग्रति समाज सेवी संस्था एक स्वैच्छिक संगठन है जो विगत 10 वर्षों से म0प्र0 के मुरैना जिले में जैवविविधता संरक्षण एवं संवर्धन पर कार्य कर रही है। समिति का कार्य :–

- स्थानीय जैव सम्पदा का संरक्षण एवं संबर्धन।
- स्थानीय समुदाय आधारित संगठनों का विकास एक क्षमता बृद्धि।
- जैवविविधता संरक्षण से आजीविकोपार्जन गतिविधियों का संचालन।
- दुर्लभ एवं विलुप्त प्रायः प्रजातियों का संरक्षण।
- समुदाय संचालित जल संरक्षण एवं मृदा संरक्षण कार्यक्रम।

## कार्यक्षेत्र का विवरण कार्य :–

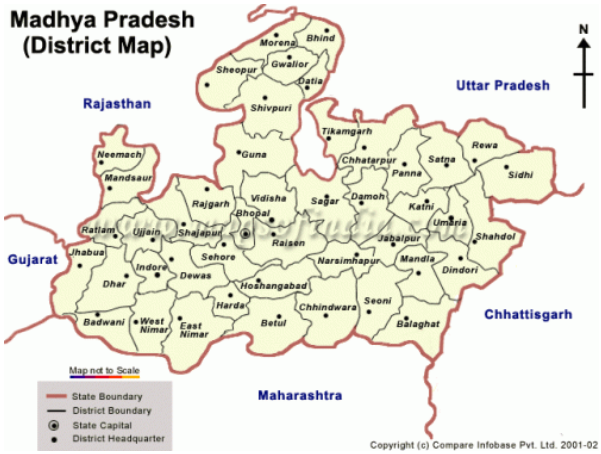


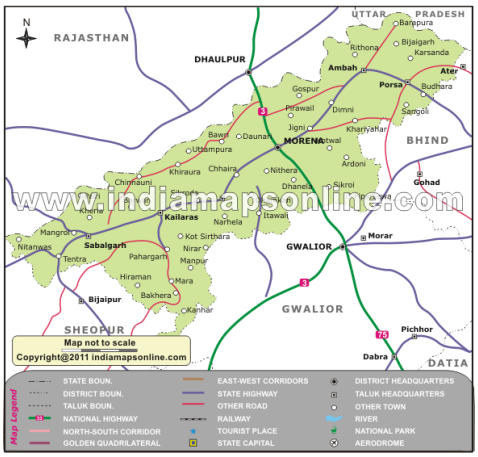


जिला – मुरैना

मुरैना जिला चम्बल के बीहडों के बीच में स्थित है। मुरैना जिला 4,998.78 वर्ग कि0मी0 के क्षेत्र में 1,587,264 (2001) की जनसंख्या बाला जिला है इसका नाम मुरैना यहॉ की राष्ट्रीय पहचान मोर के निवास स्थल के रूप में जाना जाता है। मुरैना जिले के उत्तर व पष्चिम में राजस्थान एवं उत्तर पूर्व में उत्तर प्रदेष की सीमायें लगती है इसके समीपवर्ती जिले म0प्र0, भिण्ड, ग्वालियर व ष्योपुर है। यहॉ की औसत वर्षा 700 मि0मी0 है व 35 दिन वारिष के है यहॉ के तापमान में अत्यधिक विभिन्नता है, यहॉ सर्दियों में जहॉ 0 ˚c तक पहुच जाता है वहीं गर्मीयों में 48 ˚c तक पहुच जाता है।

मुरैना जिले की प्रमुख नदियॉ चम्बल, क्वारी, आसन एवं सांक है । 435 कि0मी0 के प्रवाह क्षेत्र बाली चम्बल नदी देष की सुन्दरता एवं सबसे कम प्रदूषित नदियों में से एक है। चम्बल नदी घडियाल संरक्षण एवं दुर्लभ डॉलफिन के निवास स्थल के रूप में जानी जाती है।

मुरैना जिले के कुल भोगौलिक क्षेत्रफल के 50% भू–भाग पर कृषि कार्य किया जाता है इस कृषि क्षेत्र का 58.74 % भाग सिंचित कृषिक्षेत्र के अन्तर्गत आता है, नहर सिचाई प्रणाली के द्वारा 42.94 % कृषि भूमि की सिचाई की जाती है। बाजरा खरीफ की व सरसों एवं गेंहू रवी की मुख्य फसलें है।

**<u>जैवविधिता संरक्षण</u> :**

सुजाग्रति समाज सेवी संस्था मुरैना जिले में जैवविधिता संरक्षण के मुद्दे पर विगत 10 वर्षों से कार्य कर रही है। 2005 में जैवविविधता बोर्ड भोपाल द्वारा संस्था का चुनाव पी0बी0आर0 निर्माण के लिये किया गया 7 फरवरी 2005 में 7 दिन का प्रषिक्षण बोर्ड द्वारा प्रारम्भ किया गया एवं अप्रैल 06 में कार्यषाला का आयोजन मुरैना जिले में संस्था द्वारा किया गया। संस्था द्वारा पी0बी0आर0 निर्माण का कार्य मुरैना जिले के 5 गॉवों पिपरई, पिपरईपुरा, भानपुर, जैतपुर, बाबू सिंह की घेर तथा 5 गॉव ष्योपुर जिला– रानीपुरा, पहेला, वरगवॉ, मेहरवानी, करियादेह में किया गया। पी0बी0आर0 निर्माण के दौरान निम्न तथ्य निकल कर आये :–

- जनसंख्या तथा पुषु संख्या में लगातार बृद्धि के कारण वनोपज विषेषकर जलाउ लकडी चारा, घास एवं लघुवन उपज की बडती मॉग से जैवविविधता से संपन्न क्षेत्र कम हो रहा है।
- मिश्रित प्रजाति के स्थान पर उत्पादकता बडाने व व्यवसायीकरण के कारण एकल प्रजाति को प्रात्साहन मिला है।
- लघुवनउपज विषेषकर औषधीय प्रजाती गूगल की मॉग बडने व उसके अन्धाधुन्ध दोषपूर्ण दोहन के कारण विलुप्त प्रायः श्रेणी में आगयी है, ष्योपुर के कराहल क्षेत्र में सतावर अव खत्म होने लगी है।
- सर्वे के मुताविक नदियों के द्वारा बीहड कटाव से 800 हेक्टेयर जमीन प्रतिवर्ष बीहड में परिवर्तित हो जाती है। जैवविविधता से प्राप्त लाभों के समुचित बटवारे की व्यवस्था न होना जैवविविधता संरक्षण की कीमत स्थानीय समुदाय चुकाता है वहीं लाभ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को मिलता है।
- मिश्रित कृषि व्यवस्था के स्थान पर एकल फसल आधारित विपुल उत्पादन को मान्यता मिली। चम्बल क्षेत्र में सरसों के व्यवसायिक उत्पादन ने अन्य प्रजातियों को नष्ट किया है।

- पषुपालन क्षेत्र में आयातित नस्लों की प्राथमिकता ने भदावरी भैंस व देषी भैंस एवं चम्बल बकरी (जमुना पारी ) को खत्म किया ।
- जैवविविधता संरक्षण पर समुदाय में जागरूकता की कमी।
- चम्बल क्षेत्र में भू–क्षरण की अत्यधिकता ने बीहडों के क्षेत्र में लगातार बृद्धि की है जिसके कारण हजारों लोग भूमिहीन एवं बेघर हो रहे है तथा कई गॉव विस्थापित हुये है।

**संस्था के प्रयास :–**

संस्था ने पी0बी0आर0 से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर चम्बल नदी के किनारे बसा पिपरई पंचायत को अपना कार्यक्षेत्र बनाने का निष्चय किया। संस्था द्वारा पिपरई गॉव में जैवविविधता प्रबंधन समिति का गठन किया तथा 4 अन्य पास के गॉवों में बी0एम0सी0 बनाईं। पिपरई जैवविविधता प्रबंधन समिति व संस्था द्वारा गूगल संरक्षण एवं संबर्धन व बीहड को बडने से रोकने के लिये एक प्रस्ताव सी0 ई0 ई0 दिल्ली के पास भेजा गया।

**पिपरई गॉव –**

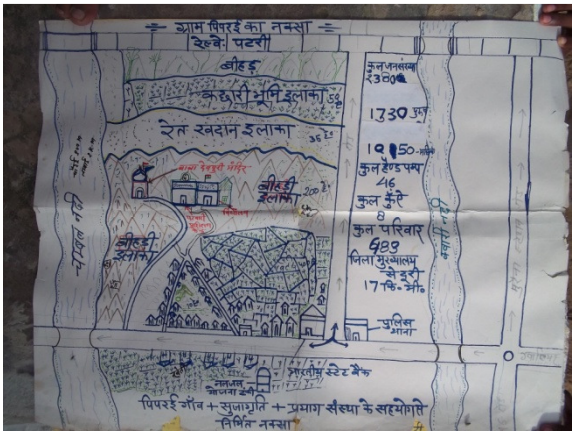


नक्षा पिपरई का पुरा

नक्षा पिपरई

पिपरई गॉव आगरा–ग्वालियर राष्ट्रीय राजमार्ग पर मुरैना जिला मुख्यलय से 17 कि0मी0 की दूरी पर चम्बल नदी के उपर स्थित है। पिपरई के उत्तर में 3 कि0मी0 की दूरी पर चम्बल नदी प्रवाहित होती है वही दक्षिण में 10 कि0मी की दूरी पर क्वारी नदी निकलती है, चम्बल व क्वारी के बीहडों के बीच में स्थित ये गॉव प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर है पिपरई के चारों ओर 8 गॉव है ( पिपरईपुरा, भानपुर, जैतपुर, बाबू सिंह की घेर, मकसूद पुर, विण्डवा, नन्दे का पुरा, नायक का पुरा ) पिपरई गॉव में 20 हैण्डपम्प 6 कुओं के द्वारा 3280 लोगों, 483 परिवारों को पीने का पानी मिलता है। गॉव में 10 समुदाय के लोग निवास करते है गुर्जर, मुस्लिम, धोवी, बडई, कुमार, गोस्वामी, नाई, कुषवाह, जाटव, कडेरे गॉव का लिंगानुपात लगभग समान है।

बीहड पिपरई के अधिकांष क्षेत्र में फेला हुआ है। पषुपालन यहॉ का प्रमुख व्यवसाय है, 97.19 प्रतिषत लोग इस धंधे से जुडे है। लगभग 470 पविवार वहीं 82.8 प्रतिषत लोग(400 परिवार) कृषि कार्य

करते है गॉव में 600 हेक्टेयर सरकारी भूमी (राजस्व की) व 660 हेक्टेयर कृषि भूमि है। पषुपालन, कृषि एवं लघुवन उपज संग्राहक पिपरई गॉव के प्रमुख आजीविकोपार्जन के साधन है, गूगल के गोंद को निकलना एवं उसका विकृय लघु किसान एवं भूमिहीन परिवारों का प्रमुख व्यवसाय है। गूगल की विनाषपूर्ण दोहन की प्रणाली ने इस प्रजाती को खत्म करना प्रारम्भ कर दिया है जिससे गरीब परिवारों की आजीविका सीधे प्रभावित हो रही है। पिपरई गॉव के लोगों ने गूगल के नष्ट होने के करण धूडने षुरू किये जो प्रमुख रूप 5 है :–

- **गलत तरीके से चीरा लगाना–** गूगल पेड में चीरा लगाकर गोंद लिकालना चम्बल क्षेत्र में परम्परागत आजीविकोपार्जन का साधन है इसमें घरेलू चाकू या कुल्हाडी में गूगल के गोंद का घोल का प्रयोग उत्प्रेरक के रूप में किया जाता है पहले गूगल की मॉग कम होने से गूगल गोंद की कीमत कम थी। राजस्थान में गूगल टेपिंग को प्रतिबंधित करने बाद चम्बल में उसकी मॉग व कीमत बड गई। व्यारियों द्वारा लोगों को अधिक गोंद निकालने के लिये रासायनिक घोल की सलाह दी जिससे अधिक व षीघ्र धन कमाने के लालच में लोगों ने रासायनिक घोल का प्रयोग पौधों पर प्रारम्भ किया जिससे पौधे सूखने लगे व खत्म होने लगे।
- **अतिक्रमण–** बीहड के कारण गॉवों का विस्थापन हुआ लोगों ने कृषि व निवास के लिये जमीनों का अतिक्रमण करना प्रारम्भ किया जिसमें गूगल के साथ अन्य प्रजातियॉ भी साफ हो गईं।
- **दीमक –** चम्बल की मिटटी ढीली व हल्की होने के कारण दीमक का खास क्षत्र है गूगल की लकडी मुलायम होने के कारण यह उसका प्रिय भोजन बनी जिससे पेड सूखने लगे।
- **मृदा क्षरण –** चम्बल में वर्षात में मिटटी के कटाव के कारण पौधे जड से उखड कर नीचे गिर जाते है और पेड खत्म हो जाते है।
- **चरवाहे –** पषुपालन यहॉ का प्रमुख व्यवसाय है व जंगल में पषु घूमते है प्रायः बकरी को चराने हेतु पेड को काट दिया जाता है जिससे ये पेड खत्म होता है।

सुजाग्रति संस्था व जैवविविधता प्रबन्धन समिति द्वारा बीहड व गूगल के संरक्षण व संबर्धन को लेकर परियोजना का आरम्भ सी0 ई0 ई0 दिल्ली के सहयोग से किया गयां

**उददेष्य –**

- गूगल का संरक्षण एवं संबर्धन करना।
- जल संरक्षण एवं मृदा संरक्षण के द्वारा बीहड फेलाव को रोकना।
- जैवविविधता संरक्षण द्वारा समुदाय को रोजगार प्रदान करना।
- समुदाय में स्थानीय नेत्रत्व एवं प्रबंधन को बढावा देना।
- जैवविविधता प्रबंधन पर नीतिगत परिवर्तन के लिये नेटवर्किंग एवं एडवोकेसी।

**गतिविधियॉ –**

गूगल प्लान्टेषन का पौधा

डौरबन्दी के बीच पक्की जल निकाष नाली बनबाते हुये दोनो गॉवों की बी0 एम0 सी0 के अध्यक्ष।

- गूगल का संरक्षण।
- नवीन पौधों का रोपण।
- महिला स्वयं सहायत समूह का निर्माण एवं उनकी क्षमता बृद्धि।
- आस–पास के गॉवों में जैवविविधता प्रबंधन समिति का गठन।
- गूगल की नर्सरी बनाना।
- समुदाय व समिति, स्वयं सहायता समूहों को प्रषिक्षण।
- जल संरक्षण एवं मृदा संरक्षण हेतु डौरबन्दी (मैढ बन्धान) बीच में पक्की जल निकास नालियों का निर्माण कराया गया।

**प्रमुख उपलब्धि –**

- **गूगल पौधे का संरक्षण एवं संबर्धन :–** संरक्षक –पिपरई व इसके आसपास के गॉवों व बीहडों में 10000 गूगल के पौधों की खोज कर उन्हें संरक्षित करने का प्रयास स्थानीय समितियों के माध्यम से किया गया व उन्हें संरक्षित किया गया।
- **नवीन रोपण –** गूगल के 10000 पौधों का नवीन रोपण पिपरई पंचायतों के बीहडों में किया गया, ये पौधे अब बड चुके है।

- गूगल के विनाषहीन विदोहन की प्रक्रिया पर पिपरई गॉव में 2 प्रषिक्षण षिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें विषेसज्ञ डॉ0 मोनी थॉमस एवं डॉ0 अतुल श्रीवास्तव ( कृषि विष्वविद्यालय जबलपुर ) द्वारा 7 दिवसीय प्रषिक्षण व टूलकिट ( गूगल से गोंद निकालने की मषीन ) प्रदान किये गये।

**2. सी बी ओ गठन –**

- जैवविविधता प्रबंधन समिति का 5 गॉवों में गठन ।
- 10 महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन।

**3. प्रषिक्षण एवं क्षमता बृद्धि –**

गूगल एवं सतावर संरक्षण पर जे एन के व्ही व्ही के वैज्ञानिक द्वारा प्रषिक्षण एवं उन्हीं के द्वारा निर्मित गोंद निकालने की मषीन चलाना सिखाते हये डॉ0 मोनी थॉमस।

- गूगल गोंद हेतु विनाषहीन विदोहन की प्रक्रिया को लेकर दो दिवसीय प्रषिक्षण।
- जैवविविधता प्रबंधन समितियों का प्रषिक्षण दो दिवसीय आदरणीय ष्याम बोहरे भोपाल द्वारा दिया गया।
- स्वयं सहायता समूहों के प्रषिक्षण।
- जल एवं मृदा संरक्षण एवं संबर्धन पर प्रषिक्षण।
- समुदायिक जागरूकता हेतु नक्कड नाटक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को प्राषिक्षित करते हुये। जल संरक्षण पर दुलारी बाई नाटक का मंचन ग्राम पिपरई में।

जाकिर हुसैन

**4. जल एवं मृदा संरक्षण –** मैढ बन्धान संस्था व समिति द्वारा समुदाय के सहयोग से 2500 मी0 मैढ बन्धान ( डौरबन्दी ) कार्य किया गया। जिससे प्रभावित होकर स्वंय समुदाय के द्वारा 3000 मी0 डौरबन्दी का कार्य किया गया।

**पत्थर की पक्की जल निकास नाली –**

बीहड को बडने से रोकने के लिये मिटटी की डौरबन्दी के बीच में 18 पक्की जल निकास नालियों का निर्माण किया गया जिससे 200 हेक्टेयर भूमि बीहड में बदलने से रोका गया।

**5. जैवविविधता उद्यान –**

सुजाग्रति संस्था एवं जैवविविधता प्रबंधन समिति द्वारा पिपरई गॉव में बाबा देवपुरी, बाबा रामदास के स्थान पर जैविविधतता उद्यान बनाया गया। जिसमें 150 प्रजाति के पौधे , पेड , फूलों के पौधे एवं लोन तैयार किया गया जिसे देखने बहुतायात संख्या में आते है। माननीय जिलाधीष एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत द्वारा चयन कर पुरूस्कार हेतु जैवविविधता बोर्ड भोपाल भेजा गया तथा इस 2012 सर्वश्रेष्ठ जैवविविधता उद्यान का पुरूस्कार सुजाग्रति संस्था को प्रदान किया गया माननीय मंत्री जी के द्वारा।

**6. आजीविकोपार्जन / स्वावलम्बन :–**

- जैवविविधता प्रबंधन समिति ने अने स्वावलम्बन की दिषा में कदम बडाना प्रारम्भ कर दिया है। समिति द्वारा बीज विक्रय से 1000 रू डाबर कम्पनी से तथा 16000 रू की गूगल कटिंग व 1500रू 25 किलो गूगल गोंद विक्रय पर जैवविविधता अधिनियम के अन्तर्गत षुल्क लेकर प्राप्त किये है।
- महिला समूह ने गूगल गोंद संग्रहण एवं विक्रय द्वारा व नर्सरी से पौधों की बिक्री द्वारा महिलाओं को रोजगार प्रदान किया है। प्रत्येक महिला को वर्तमान में 2500 से 3000 रू वार्षिक अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है।

**7. पर्यावरण मित्र –**

- संस्था द्वारा 125 विद्यालयों में सी ई ई दिल्ली के माध्यम से पर्यावरण मित्र कार्यकम चलाया जा रहा है जिसमें 5 गतिविधि जल संरक्षण, जैवविविधता, कचडे का प्रबंधन, संस्कृति एवं धरोहर, उर्जा की बचत के गुण बच्चों एवं षिक्षकों को सिखाये जा रहे है। इसी तारतम्य में कवि पंचायत एवं कुछ साहित्य का सृजन भी किया गया।

माननीय मंत्री नरोत्तम मित्र द्वारा वरगद का न्याय पुस्तक का विमोचन करते हुये ।

पर्यावरण मित्र की 5 गतिविधियों पर जानकारी देते हुये बी एम सी अध्यक्ष श्री राजेन्द्र तोमर।

**प्रभाव –**

- समुदाय में जागरूकता का स्तर बडा है व उन्होंने स्वयं गूगल का संरक्षण एवं रोपण प्रारम्भ कर दिया है।
- समितियॉ स्वावलम्बी वन रहीं है।
- महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता मिलने से परिवार में उनको सम्मान मिलने लगा है व परिवार के निर्णय में उनका महत्वपूर्ण स्थान है।
- बीहडों का बढना रूका है, जिसमें कृषि भूमि संरक्षित हुई है।
- जल संरक्षण के प्रयास से जल स्तर उपर उठा है।
- भूमि में नमी बडने से कृषि के लिये पानी कम लगने लगा है। पहले 4 पानी की जगह 3 की ही जरूरत पड रही है।
- महिलाओं में जागरूकता का स्तर बडने बच्चीयों का स्कूल जाने का प्रतिषत 65 से 90 पर पहुच गया है।
- स्वच्छता के प्रति लोगों में जागरूकता आ रही है व षौचालय निर्माण प्रारम्भ हुये है।

संस्था व जैवविविधता प्रबंधन समिति पिपरई का यह प्रयास समुदाय संस्था अकेडमिक, संस्थान, जैवविविधता बोर्ड, सी ई ई दिल्ली के संयुक्त प्रयास का स्वरूप है। आज समिति स्वावलम्बन की ओर बड रही है चम्बल की प्राकृतिक सम्पदा जैवविविधता के संरक्षण व संबर्धन का यह प्रयास और व्यापक होगा व क्षेत्र की अन्य पंचायत भी इसी प्रयास में सामिल होंगी। सुजाग्रति संस्था क्षेत्र की अन्य पंचायतों में भी इसी प्रकार के प्रयासों को प्रारम्भ कर चकी है।

**अध्यक्ष**

**सुजाग्रति समाज सेवी**

**संस्था मुरैना म0प्र0**